विषयाऽनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषयाः		पृ.सं.
	सम्पादकीयम्		I-II
१.	श्री गुरुचरितमतल्लिका	प्रो. बृजेशकुमारशुक्लः	०१
२.	वेङ्कटाध्वरि-वरदाभ्युदयचम्पूः	डॉ. वि.श्रीनिवासशर्मा	२४
३.	कालिदासकाव्येषु व्याकरणिकोपमानिरूपणम्	डॉ.मितालीदेवः	४१
४.	ध्वन्यालोकलोचनेऽभिनवगुप्तस्वातन्त्र्यम्	प्रो. रहसबिहारीद्विवेदी	४५
५.	आनन्दवर्धन की रसदृष्टि के व्याख्याकार : आचार्य अभिनवगुप्त	प्रो. अभिराजराजेन्द्र मिश्र	६२
६.	अभिनवगुप्तपादाचार्य का सङ्गीतकलादर्शन	प्रो. उमारानी त्रिपाङ्गी	७७
७.	अभिनवगुप्त का काव्यशास्त्रीय योगदान	प्रो. राजेश्वर मिश्र	८४
८.	अभिनवगुप्त की दृष्टि में पूर्वरङ्ग विधान	डॉ. आशा	९६
९.	अभिनवभारती-सम्मत रसानुभूतिगत विघ्नसत्तक	डॉ. सरोज कुमार शुक्ल	१०२
१०.	संस्कृत वाङ्मय में निबद्ध सार्वजनीन चिन्तन	डॉ. सुधा गुप्ता	१०८
११.	रसगङ्गाधर की नव्यन्याय भाषा का शेमुषी समुन्मीलन	अनिल प्रताप गिरि	११४
१२.	कालिदासाभिमत अष्टमूर्ति शिव की वैदिक वसुओं से तुलना एवं वर्तमान में उसकी उपादेयता	डॉ. अनीता	१२२

क्र.सं.	विषयाः		पृ.सं
१३.	स्वातन्त्रयोत्तर संस्कृत गीतिकाव्यों का वैशिष्ट्य,	डॉ. लाखन सिंह शाक्य	१३
14.	THE CONCEPT OF TEACHER AND TAUGHT IN KALIDASA'S WORKS	Smt. Shridevi Kulkarni	14
15.	RELEVANCE OF SĀDACĀRA IN MODERN AGE WITH REFERENCE TO THE VIṢṆU PURĀṆA	Dr. Hiran Sarmah	15

OOO